

## 1. जनसंचार और रचनात्मक लेखन (Mass Communication and Creative Writing)

- यह दस्तावेज़ दिल्ली विश्वविद्यालय के दूरस्थ और सतत शिक्षा विभाग द्वारा "एबिलिटी एन्हांसमेंट कोर्सेज (AEC)" के तहत यूजी पाठ्यक्रमों (सेमेस्टर-III/IV) के लिए "जनसंचार और रचनात्मक लेखन (हिन्दी-ख)" नामक एक पाठ्यक्रम सामग्री है।
- यह यूजीसीएफ - 2022 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार तैयार किया गया है।

## 2. रचनात्मक लेखन (Creative Writing)

### • परिभाषा और प्रकृति:

- रचनात्मकता वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लेखक या कलाकार अपनी अमूर्त भावनाओं, विचारों या अनुभवों को मूर्त रूप देता है। इसे सृजनात्मकता भी कहा गया है।
- मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, रचनात्मकता एक जन्मजात गुण है, एक प्रतिभा या अद्वितीय क्षमता है, और यह वातावरण के प्रति व्यवहार का एक संज्ञानात्मक, शैलीगत और संवेगात्मक प्रकार है।
- यह नए संबंधों को देखने की क्षमता, असाधारण विचारों को उत्पन्न करने की शक्ति और पारंपरिक चिंतन पद्धति से अलगाव की प्रवृत्ति है।

- रचनात्मकता मनुष्य की अंतःचेतना की वह जन्मजात, स्वायत्त शक्ति है, जो प्रेरणा एवं तदनुकूल परिस्थिति होने पर उद्भूत व व्यापार-तत्पर होती है तथा ज्ञान एवं अभ्यास से विकसित की जा सकती है।
- लेखन एक कला है जो मनुष्य को जन्मजात प्राप्त नहीं होती, बल्कि इसे गहन साधना और अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है।

• **महत्व:**

- रचनात्मक लेखन से लेखक के व्यक्तित्व की सहज अभिव्यक्ति होती है।
- यह समाज के यथार्थ को लेखक के अपने दृष्टिकोण से देखकर, समझकर और महसूस करके अभिव्यक्ति प्रदान करता है।
- रचनात्मक लेखक 'जीवन सत्य' की अभिव्यक्ति करता है, जो समाज के गतिशील परिवर्तनों के प्रति सदैव सजग रहता है।
- यह मनुष्य को जीवन को देखने की नई दृष्टि प्रदान करती है और कलात्मक कार्य में प्रवृत्त होने में मदद करती है।

• **पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण:**

- पहले माना जाता था कि मानव दैवीय प्रेरणा के आधार पर विशिष्ट लेखक बनता है।
- आधुनिक युग में, ज्ञान और विज्ञान के साधनों ने इस अवधारणा को निरर्थक साबित कर दिया है।

- आज कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि के लिए मनुष्य अभ्यास और प्रशिक्षण द्वारा अपनी लेखन क्षमता विकसित कर सकता है।
- पश्चिम के आलोचकों ने भी आरंभ में रचनात्मकता को दैवीय शक्ति के रूप में स्वीकार किया (जैसे प्लेटो)।
- अरस्तू की सृजनात्मक-रचना प्रकृति का यथावत प्रत्यंकन न होकर कल्पनात्मक पुनर्सृजन है।
- मनोविज्ञान इसे दैवीय प्रेरणा या प्रकृति की अद्वितीय क्षमताओं के प्रस्थान बिंदु के रूप में स्वीकार करने से इनकार करता है, और इसे रचनाकार की नैसर्गिक मनोवृत्ति मानता है।
- कुछ लोग इसे तीव्र बुद्धि से जोड़ते हैं, लेकिन मनोविज्ञान ने इसे अस्वीकार किया है, उनका मानना है कि बुद्धि का संबंध संज्ञानात्मक जटिलता से है और रचनात्मकता का संबंध नवीन अभिव्यक्त भाव एवं संवेग की संपन्नता से है।

• **रचनात्मक और सूचनात्मक साहित्य में अंतर:**

- रचनात्मक साहित्य भावनाओं, संवेदनाओं और विचारों की गहरी अनुभूति के द्वारा मनुष्य की चेतना को नव्यता प्रदान करता है।
- सूचनात्मक साहित्य ज्ञान को बढ़ाता है लेकिन भावनाओं को कम उत्तेजित करता है। पत्रकारिता से संबंधित साहित्य इसी श्रेणी में आता है।

- रचनाकार के लेखन का आधार 'भाव' होता है, जबकि पत्रकार के लेखन का आधार 'तथ्यों का निरूपण' होता है।

### 3. लेखन के विविध क्षेत्र (Diverse Fields of Writing)

#### • मौखिक और लिखित रूप (Oral and Written Forms):

- लिपि के आविष्कार से पहले साहित्य केवल मौखिक रूप में ही विद्यमान था।
- मनुष्य समाज ने मौखिक रूप से संस्कृति और मानव जीवनधारा को जीवंत रखा।
- लिपि के आविष्कार के साथ मनुष्य ने अपनी संवेदनाओं और विचारों को लिखित रूप में सहेज लिया।
- कैलाशनाथ तिवारी के अनुसार, बहुत-सी बातें जो साहित्य में स्थान नहीं पातीं, जनसामान्य के बीच वाणी रूप में जीवित रहती हैं, उसे मौखिक साहित्य कहा जाता है।
- मौखिक साहित्य की अपनी सीमाएँ हैं; यह लिखित साहित्य की अपेक्षा कम व्यापक रूप से समाज तक पहुँच पाता है। लिखित साहित्य की संप्रेषणीयता अधिक विस्तृत है।

#### • गद्य और पद्य रूप (Prose and Poetry Forms):

- भारतीय भाषाओं और विश्व की सभी भाषाओं में साहित्य लेखन का आरंभ पद्यात्मक रूप में ही हुआ।

- आधुनिक युग में गद्य विधाओं का तेजी से विकास हुआ (कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र)।
- आधुनिक युग को 'गद्य युग' भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें विचारोत्तेजकता और यथार्थपरकता पर बल दिया गया।
- वर्तमान में, हिंदी की लेखन परंपरा में गद्य और पद्य दोनों रूपों में समान रूप से लेखन कार्य किया जा रहा है।

• **कथात्मक और कथेतर रूप (Narrative and Non-narrative Forms):**

- गद्य की सर्वप्रथम विधाओं में कथात्मक विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी) को अधिक प्राथमिकता मिली।
- समय के विकास के साथ जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र आदि ने भी कथात्मक विधाओं में विशिष्ट स्थान बनाया।
- आधुनिक युग में 'व्यंग्य' एक ऐसी विधा के रूप में उभरा जो कथात्मक और कथेतर दोनों रूपों में प्राप्त होता है।

• **पाठ्य और मंचीय रूप (Readable and Stageable Forms):**

- नाटक को एक प्रयोगधर्मी कला माना जाता है।
- भारतीय नाट्यशास्त्र नाटक की 'अभिनेयता' को उसका विशिष्ट गुण मानता है।

- जयशंकर प्रसाद के नाटकों को पठनीयता की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थान मिलता है, भले ही वे रंगमंच के लिए अव्यावहारिक माने गए हों।
- आधुनिक युग में वैज्ञानिक प्रगति ने साहित्य और रंगमंच के बीच की दूरी कम की; रेडियो के आविष्कार से पाठ्य-नाटकों का एक नया स्वरूप (ध्वनि रूपक) उभरा।

#### **4. जनसंचार माध्यम और रचनात्मकता (Mass Communication Media and Creativity)**

- **आधुनिक युग:** सूचना और संचार का युग है; वैश्वीकरण ने विश्व को एक 'ग्लोबल विलेज' बना दिया है।
- **माध्यम की भूमिका:**
  - मैकलुहान के अनुसार, "माध्यम ही संदेश है"।
  - तकनीक के विकास ने जनसंचार माध्यमों को नियंत्रण-मुक्त और एकतरफा भी बनाया है।
  - नए इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों (इंटरनेट) ने वैश्विक सूचनाओं का दायरा समेट दिया है और ज्ञान के भंडार को सहज बना दिया है।
- **प्रिंट माध्यम (Print Media):**
  - आधुनिक जनसंचार माध्यमों में सबसे प्राचीन।

- इसकी प्रासंगिकता और विश्वसनीयता अधिक है क्योंकि यह मुद्रित होता है।
- समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, इश्तेहारों, पर्चों आदि का प्रकाशन उद्योग फल-फूल रहा है।
- प्रिंटिंग मशीन का आविष्कार गुटेनबर्ग ने 1440-1450 ई. के बीच जर्मनी में किया था।
- भारत में 1556 ई. में पुर्तगालियों द्वारा प्रिंटिंग मशीन लाई गई।
- जेम्स ऑगस्टस हिकी ने भारत में पहला मुद्रित समाचार-पत्र 'बंगाल गजट' 1780 में प्रकाशित किया।
- हिंदी का पहला समाचार-पत्र 'उदंत मार्तंड' 1826 में जुगल किशोर के संपादन में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।
- पुस्तकें ज्ञान का सर्वोत्तम स्रोत मानी जाती रही हैं। जब तक पुस्तकें हैं तब तक मनुष्य सभ्यता और संस्कृति है।
- प्रिंट माध्यम के लिए साक्षरता अनिवार्य तत्व है।
- इसमें पुस्तक के लिए गहन भाषा और अन्य रूपों के लिए लोकप्रिय भाषा का प्रयोग होता है।
- **इलेक्ट्रॉनिक माध्यम (Electronic Media):**
  - रेडियो और टेलीविजन ने संचार जगत में क्रांति उत्पन्न की।
  - **रेडियो:** श्रव्य माध्यम है। मैक्सवेल (1864) और हर्ट्ज (1888) ने रेडियो तरंगों की खोज की। गुग्लियेल्मो मार्कोनी ने 1895 में बेतार

संदेशों को रेडियो चुंबकीय तरंगों के सहयोग से भेजने की प्रक्रिया खोजी।

- भारत में रेडियो का आगमन 1923 में निजी स्तर पर हुआ। 1936 में इसे 'ऑल इंडिया रेडियो' नाम दिया गया। बाद में 1957 में इसका नाम 'आकाशवाणी' हो गया।
  - एफ.एम. के आगमन (1977) से रेडियो में मनोरंजन की नई दुनिया आई।
  - रेडियो की भाषा सहज, सरल और स्पष्ट होनी चाहिए; गूढ़ शब्दावली से बचना चाहिए।
  - रेडियो में 'एवं', 'तथा', 'अन्ततो गत्वा' जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता।
- **टेलीविजन:** श्रव्य के साथ-साथ दृश्यों को भी प्रसारित करता है।
- जॉन लॉगी बेयर्ड ने 1925 में टेलीविजन का पहला उपकरण निर्मित किया।
- भारत में दूरदर्शन की शुरुआत 15 सितंबर, 1959 को यूनेस्को की सहायता से हुई। 1982 से रंगीन दृश्यों का प्रसारण आरंभ हुआ।
  - टेलीविजन की भाषा कार्यक्रम के प्रकार और दर्शक वर्ग को ध्यान में रखकर प्रयोग की जानी चाहिए।



- **फिल्म:** गतिशील चित्रों का आविष्कार थॉमस एडिसन को दिया जाता है।
  - भारत में फिल्मों का आरंभ 1913 से होता है, जब दादा साहब फाल्के ने 'सत्य हरिश्चंद्र' नामक मूक फिल्म का निर्माण किया।
  - 'आलम आरा' (1931) भारत की पहली बोलती फिल्म थी।
- **वीडियो पत्रकारिता:** यह एक पूरी तरह से निजी माध्यम है, जिस पर सरकार का नियंत्रण नहीं है। भारत में इसकी शुरुआत 1987 से मानी जाती है।
- **कंप्यूटर:** आज संचार के क्षेत्र में इसका विशेष स्थान है; इसने आधुनिक मानव समाज को 'विश्व ग्राम' (Global Village) में परिवर्तित कर दिया है। ब्लेज़ पास्कल (1642) ने एक यंत्र का निर्माण किया, और चार्ल्स बैबेज (1833) ने 'एनालिटिकल इंजन' का आविष्कार किया जिसे मूल कंप्यूटर माना जा सकता है।
- **इंटरनेट:** कंप्यूटर तंत्र का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावी साधन है। इसका आरंभ संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विकास अकादमी द्वारा 1990 में किया गया। लाखों, करोड़ों सूचनाओं को अपने में समेटे इंटरनेट में समाचार-पत्र और टेलीविजन को भी स्थान मिला है।
- **मोबाइल:** जनसंचार के सशक्त माध्यम के रूप में उपस्थित है; यह टेलीविजन, रेडियो, अखबार, कैमरा, फोन सभी का सम्मिलित रूप

ले चुका है। सोशल मीडिया वेबसाइट्स ने सूचनाओं के त्वरित प्रसारण में अभूतपूर्व कार्य किया है। अब हर व्यक्ति संचारक है।

• **बाह्य संचार माध्यम (External Communication Media):**

- सबसे पुरानी संचार प्रणाली, सीधे जनता तक पहुँचने का विशिष्ट माध्यम।
- प्रदर्शिनियाँ और मेले।
- नुक्कड़ नाटक (Street Plays): किसी मंच या सभागार की आवश्यकता नहीं होती; किसी भी स्थान पर खड़े होकर एक दायरे में नाटक करना आरंभ कर देते हैं। आमतौर पर किसी सामाजिक समस्या को आधार बनाकर खेले जाते हैं।

## 5. विज्ञापन लेखन (Advertising Writing)

• **अर्थ और परिभाषा:**

- 'विज्ञापन' दो शब्दों 'वि' (विशेष) और 'ज्ञापन' (ज्ञान कराना) से बना है, जिसका अर्थ है किसी विशेष उत्पाद की ओर ध्यान आकर्षित करना, उसके बारे में ज्ञात कराना और सूचना देना।
- विज्ञापन प्रचार का एक प्रभावशाली एवं सशक्त साधन है जिसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के विक्रय का विकास होता है।
- कैनफील्ड और फ्रैजर मूर के अनुसार, "विज्ञापन लोक-हित के प्रोत्साहन के लिए किया जाता है। अतः यह लोक-सेवा है"।

• **उद्देश्य:**

- उत्पाद और सेवाओं की सूचना देना।
- ध्यान आकर्षित करना।
- रुचि उत्पन्न एवं प्रभावित करना।
- विश्वसनीयता बनाना।
- स्मृति बढ़ाना एवं प्रभावित करना ('एड-रिकॉल' - Ad-Recall)।
- क्रय-इच्छा उत्पन्न करना।
- छवि-निर्माण करना।
- सामाजिक चेतना जाग्रत करना।
- विक्रय-वृद्धि करना।
- फुटकर व्यापार बढ़ाना।

• **गुण (एक प्रभावी और प्रेरक विज्ञापन के):**

- **संदेश से संबंधित गुण:** आकर्षकता, सरलता, प्रेरक तत्व, रुचिकर एवं मनोरम, मुख्य विशेषता पर बल, विश्वसनीयता।
- **उपभोक्ता की पहुँच से संबंधित गुण:** सुलभता (लक्ष्य उपभोक्ता तक पहुँच), बारंबारता (संदेश की पुनरावृत्ति), समयबद्धता (प्रसारण का सही समय)।

• **प्रकार:**

- **औद्योगिक इकाई/व्यावसायिक संगठन के आधार पर:**  
औद्योगिक विज्ञापन, उपभोक्ता विज्ञापन, वित्तीय विज्ञापन, संस्थागत विज्ञापन।
- **विज्ञापनदाताओं के आधार पर:** व्यक्तिगत विज्ञापन, फुटकर विज्ञापन, थोक विज्ञापन, उत्पादन विज्ञापन, राजकीय विज्ञापन, सहकारी विज्ञापन।
- **समाचार-पत्रों/पत्रिकाओं में स्वरूप के आधार पर:** वर्गीकृत विज्ञापन, प्रायोजित परिशिष्ट।
- **भौगोलिक आधार पर:** अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन, राष्ट्रीय विज्ञापन, क्षेत्रीय विज्ञापन, स्थानीय विज्ञापन।
- **माध्यम के आधार पर:** प्रेस विज्ञापन, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम विज्ञापन, बाह्य विज्ञापन, डाक विज्ञापन, अन्य माध्यम (जैसे मेले/त्योहार, फैशन शो, उपहार सामग्री)।
- **विज्ञापन आलेखन (Layout):**
  - सफल विज्ञापन के लिए संक्षिप्त और सरल शब्दावली का प्रयोग आवश्यक है।
  - विज्ञापन आलेखन रचनात्मक कार्य है।
  - आलेख तैयार करते समय पाँच तथ्यों पर विचार करना चाहिए: लक्ष्य उपभोक्ता 'कौन' है? 'किस' माध्यम से विज्ञापन होगा? 'क्या' कहना है? 'क्यों' विज्ञापन देना है? और संदेश 'कैसे' कहना है?।

- मुख्य अंग: शीर्षक, उपशीर्षक, विषय वस्तु/कॉपी, चित्र, रंग, व्यावसायिक चिह्न, नारा/स्लोगन, विन्यास कला (लेआउट), विज्ञापन की भाषा।
- विज्ञापन की भाषा एक अलग प्रकार की भाषा होती है, जिसे उपदेशात्मक भाषा कहा जा सकता है।

## 6. जनसंचार माध्यमों में हिंदी भाषा (Hindi Language in Mass Communication Media)

- जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के लेखन के लिए भाषा ही ऐसा आधार है जिसके द्वारा सहजता से सूचनाओं को संप्रेषित किया जाता है।
- जनसंचार की भाषा को उसके प्रत्येक माध्यम के अनुरूप उपयोगी होना आवश्यक है।
- विशेषताएँ:
  - **सहजबोध (Easy Comprehension):** भाषा में ऐसे शब्दों का प्रयोग हो जो बोलचाल और लोकव्यवहार में हों।
  - **मानकीकरण (Standardization):** अत्यंत आवश्यक है; मानक वर्तनी (Spelling), मानक लिपि (Script), मानक व्याकरण (Grammar), और मानक उच्चारण (Pronunciation) पर आधारित होना चाहिए।

- वर्तनी की अशुद्धियों से बचने के लिए शब्दकोश का सहारा लेना चाहिए।
- मानक लिपि का प्रयोग करना चाहिए।
- व्याकरण की दृष्टि से शुद्धता आवश्यक है, क्योंकि गलत प्रयोग से पाठक को सही अर्थ प्राप्त नहीं हो पाता।
- मानक उच्चारण (प्रस्तुतकर्ता को शब्दों का सही और स्पष्ट उच्चारण करना चाहिए)।
- **दृश्यत्मकता (Visualizability):** भाषा में दृश्यत्मकता का गुण होना आवश्यक है, ताकि पाठक/श्रोता के सामने घटना या सूचना का दृश्य उपस्थित हो जाए। रेडियो जैसे श्रव्य माध्यम के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
- **सामान्य गुण:** स्पष्ट, सुरुचिपूर्ण, संवेदनामय, प्रभावशाली।
- पत्रकारिता की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है, जिसे सामान्य जन आसानी से समझ सकता है। इसमें हिंदी के साथ-साथ उर्दू तथा अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को भी स्थान दिया जाता है।

## 7. लेखन क्षमता का विकास (Development of Writing Ability)

- रचनात्मक लेखन के जानकारी इन विधाओं को उचित रूप से समझ सकते हैं।

- लेखन की सफलता के लिए भाषा की व्याकरणिक संरचना और जनसंचार माध्यमों की तकनीकी संरचना का ज्ञान आवश्यक है।
- जितना ज़्यादा पढ़ेंगे और लिखने का अभ्यास करेंगे, उतनी ही ज़्यादा रचनात्मक क्षमता उभरकर आएगी।